International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 07-09-2022, Accepted: 23-09-2022, Published: 10-10-2022
Volume 8, Issue 5, 2022, Page No. 43-45

व्यंग्य साहित्य पर तत्कालीन परिस्थितियों का प्रभाव

प्रतिमा यादव
शोधार्थी, भारतीय भाषा केंद्र, भाषा, साहित्य एवं संस्कृति संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
आज़ादी के बाद के वर्षों में भारत में अनेक राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक विसंगतियाँ पनपी और साथ ही भ्रष्टाचार, ग़रीबी, भुखमरी जैसे मुद्दों नें इन विसंगतियों को और बढ़ावा दिया। स्वाधीनता पूर्व जिस बंधन के कारण लेखक की कलम बंधीं हुई थी उस बंधन की डोर आज़ादी के बाद टूट गयी। इन सभी परिस्थितियों नें एक ऐसी उर्वरक भूमि तैयार की जिसने अनेक व्यंग्यकारों को पैदा किया। व्यंग्य अचानक से नहीं उपजा वरन् व्यंग्य का जन्म क्रमिक रूप से हुआ है। जैसे–जैसे मानव सभ्यता का विकास होता गया वैसे–वैसे मानव–समाज में विसंगतियाँ भी उत्पन्न होती चली गयी। इन्हीं विसंगतियों के परिणामस्वरूप व्यंग्य का प्रादुर्भाव हुआ। व्यंग्य के इतिहास में काल–विशेष की परिस्थितियों एवं प्रवृत्तियों का विशेष योगदान रहा है। इन परिस्थितियों नें कई बार अवसर के रूप में तो कई बार समस्याओं के रूप में व्यंग्यकार को प्रभावित किया है।

मूल शब्दः व्यंग्य साहित्य का इतिहास; व्यंग्य; व्यंग्य साहित्य; हरिशंकर परसाई; हरिशंकर परसाई के व्यंग्य; श्रीलाल शुक्ल; श्रीलाल शुक्ल के व्यंग्य; व्यंग्य का इतिहास; रविंद्रनाथ त्यागी; भारतेंदु युगीन व्यंग्य; बेडब बनारसी युगीन व्यंग्य; परसाई युगीन व्यंग्य; आधुनिक व्यंग्य।

प्रस्तावना

'व्यंग्य' साहित्य की वह विधा है जिसमें रचनाकार पाठक तक अपनी बात इस तरह से पहुँचाता है कि पाठक को एक साथ कई रसों की अनुभूति होती है। व्यंग्य पाठक के होंठों पर मुस्कान लाते हुए पाठक को कथित विषय के बारे में सोंचने को मजबूर कर देता है और पाठक को अपने हृदय पटल पर एक मीठी चुभन महसूस होती है। 'व्यंग्य' शब्द को अंग्रेज़ी भाषा के 'सटायर' शब्द का पर्याय माना जाता है। इसी सटायर शब्द के पर्याय के रूप में हिंदी में व्यंग्य, व्यंग, विकृति, उपहास, परनिंदा, आदि शब्द प्रचलित होते चले गए। इनमें सर्वाधिक प्रसिद्धि 'व्यंग्य' शब्द को ही मिली। 'व्यंग्य' शब्द को गुजराती भाषा में 'कटाक्ष' तथा उर्दू भाषा में 'तंज' कहते हैं। व्यंग्य का जन्म क्रमिक रूप से हुआ है। जैसे–जैसे मानव सभ्यता का विकास होता गया वैसे–वैसे मानव–समाज में विसंगतियाँ भी उत्पन्न होती चली गयी। इन्हीं विसंगतियों के परिणामस्वरूप व्यंग्य का प्रादुर्भाव हुआ। इस शोध–पत्र में व्यंग्य के वर्तमान स्वरूप को जन्म देने वाले कारणों पर प्रकाश डाला जाएगा।

व्यंग्य साहित्य में भारतेंदु युग का आरम्भ सन् १८७३ ई० से माना जा सकता है, वहीं हिंदी साहित्य में भारतेंदु युग बहुत पहले ही आरम्भ हो जाता है। साहित्य की दोनो विधाओं के काल में फर्क उन विधाओं की रचनाओं की उपलब्धता के आधार पर किया गया है। क्योंकि व्यंग्य के साहित्य को लिखने के लिए साहित्य के पूर्व मार्ग को नहीं अपनाया जा सकता है। हिंदी साहित्य में भारतेंदु काल का आरम्भ १८५७ ई० से मानने पर उस काल के अनेक रचनाकारों को भी स्थान मिल जाता है। वहीं व्यंग्य के सम्बंध में ऐसी आवश्यकता नहीं होती। 'वैदिक हिंसा–हिंसा न भवति' के पूर्व किसी भी रचना को 'व्यंग्य' की परिधि में समाहित नहीं किया जा सकता है। इस रचना के पूर्व की रचनाएँ व्यंग्य की कसौटियों, जैसे व्यंग्य सम्मत भाषा, चुटीली शैली, उपयुक्त शीर्षक, सामाजिक सरोकार और प्रहारात्मकता आदि पर खरी नहीं उतरती हैं। ऐसे में व्यंग्य के भारतेंदु काल का आरंभ इस रचना के पूर्व मानने की कोई बाध्यता या आवश्यकता नहीं होती है। इन्हीं आधारों पर 'वैदिक हिंसा–हिंसा न भवति' को प्रथम व्यवस्थित व्यंग्य रचना होने का गौरव प्राप्त है। बालमुकुंद गुप्त जी की व्यंग्य रचनाएँ व्यंग्य शैली के हिसाब से पूर्ण रूप से भारतेंदु जी के समान हैं। उनकी रचनाएँ विषय, शैली, भाषा आदि की दृष्टि से भारतेंदु युगीन रचनाओं के निकट प्रतीत होती हैं जिसकी वजह से बालमुकुंद गुप्त को भारतेंदु काल में सम्मिलित किया गया है। आदिकाल की सीमा १९१० तक स्वीकार करने का राजनीतिक कारण यह है कि १९१० के बाद के समय में अंग्रेजों के ख़िलाफ़ मुहिम में तेज़ी देखने को मिलती है और अंग्रेज प्रशासन नें भी इस मुहिम को दबाने के लिए अनेक प्रयास किये गए। १९१० के बाद के इतिहास में गांधी जी नें पूरे देश के लोगों को अंग्रेजों की ज़्यादतियों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने के लिए एक बंधन में पिरोने का कार्य किया। इस सामूहिक अभिव्यक्ति नें न सिर्फ़ राजनीतिक वरन, सामाजिक और आर्थिक आधारों पर भी लोगों को जागृत करते हुए उन्हें एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया। इन सभी परिवर्तनों की अभिव्यक्ति तात्कालिक व्यंग्यों में भी देखने को मिलती है।

युगीन व्यंग्य की अगर बात करें तो इस युग में हिंदी साहित्य की गद्य विधा का भी विकास हो रहा था। अर्थात् गद्य भाषायी एवं आकार की दृष्टि से अभी भी विकास के क्रम में थी। कुछ रचनाकारों नें गद्य की रचना में पद्य को अनिवार्य तत्व मानते हुए गद्य में भी पद्यात्मक पंक्तियाँ जोड़ दी। भारतेंदु जी नें स्वयं अपनी रचनाओं 'वैदिक हिंसा हिंसा न भवति' एवं 'अंधेर नगरी चौपट राजा' में पद्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। ऐसे भाषायी, शैलीगत एवं सामाजिक परिस्थितियों के बीच भारतेंदु युगीन व्यंग्य का विकास हो रहा था। इसका परिणाम यह हुआ की इस युग की पद्यात्मक व्यंग्य रचनाओं को भाषायी दृष्टि से गद्यात्मक व्यंग्य रचनाओं से बेहतर माना जा सकता है। भाषा एवं शैली की दृष्टि से गद्यात्मक व्यंग्य रचनाएँ अभी विकास की अवस्था में थी।

भारतेंदु युग के बाद सन् १९१० ई० से १९४७ ई० तक के समय में भारत में अनेक आंदोलन, विरोध एवं प्रतिरोध देखने को मिलते हैं। इस दौरान अंग्रेजों की क्रूर नीतियाँ जैसे प्रेस एवं लेख पर सेन्सर आदि देखने को मिलती हैं। इन नीतियों नें तात्कालिक साहित्य लेखन को भी प्रभावित किया। इस समय व्यंग्य एक महत्वपूर्ण विधा के रूप में आगे आयी जिसने लोगों के विद्रोह को परोक्ष रूप से दिखाते हुए पाठक को गुदगुदाने का कार्य किया। इस समय के सर्वप्रमुख व्यंग्यकार बेढ़ब बनारसी जी हैं। यह समय भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति तक चलता है, जिसकी वजह से

यह समय साहित्यिक–परतंत्रता का प्रतिनिधित्व करता है। अंग्रेजों द्वारा आरोपित सेन्सर की वजह से इस युग की रचनाओं में धार, निर्भीकता और प्रहारात्मकता में कमी आ गयी। राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक सभी क्षेत्रों में अंग्रेजों का हस्तक्षेप था जिसकी वजह से इन सभी मुद्दों पर रचना करना एक कठिन कार्य था। यही वजह रही कि इस काल की रचनाओं को विषय–चयन और निर्भीकता की दृष्टि से उत्तम नहीं कहा जा सकता है। भारत की स्वाधीनता के बाद राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आदि सभी क्षेत्रों में परिवर्तन हुआ। इसी वजह से इस युग की सीमा भारतीय स्वाधीनता तक ही मानी जाती है।

आज़ादी के बाद के वर्षों में भारत में अनेक राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक विसंगतियाँ पनपी और साथ ही भ्रष्टाचार, ग़रीबी, भुखमरी जैसे मुद्दों नें इन विसंगतियों को और बढ़ावा दिया। स्वाधीनता पूर्व जिस बंधन के कारण लेखक की कलम बंधीं हुई थी उस बंधन की डोर आज़ादी के बाद टूट गयी। इन सभी परिस्थितियों नें एक ऐसी उर्वरक भूमि तैयार की जिसने अनेक व्यंग्यकारों को पैदा किया। इस काल के व्यंग्यों में निर्भीकता और विषय–चयन की स्वतंत्रता को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस काल के व्यंग्यकार की रचनाओं में आक्रोश की प्रमुखता के साथ तीखे एवं तिलमिलाने वाले व्यंग्यों की अधिकता रही है। इसी काल में सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई जी की व्यंग्य रचनाओं का आरंभ होता है। साथ ही १९४७ में आज़ादी के बाद भारत की परिस्थितियाँ बदली और नई समस्याएँ देश के सामने आयी। आज़ादी के तुरंत बाद ही बँटवारे की त्रासदी, कश्मीर में पाकिस्तानी हमला उसके कुछ वर्षों के बाद भारत–चीन युद्ध, पुनः भारत–पाकिस्तान युद्ध जैसी समस्याओं से देश को जूझना पड़ा। पुनः पूर्वी पाकिस्तान से उपजी शरणार्थी समस्या और इसी मुद्दे की वजह से भारत–पाकिस्तान युद्ध आदि राजनीतिक अवस्थाओं से देश गुजरा। इन सभी बाह्य कारकों नें भी भारतीय व्यंग्य लेखन को प्रभावित किया। इस युग नें न सिर्फ़ राष्ट्रीय स्तर पर परिवर्तन देखे वरन् अनेक अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों से भी देश को निपटना पड़ा। यही वजह रही की इस युग में व्यंग्य लेखन में बहुत अधिक विविधता देखने को मिलती है। सन् १९७५ में इंदिरा गांधी सरकार द्वारा आपातकाल की घोषणा से देश में पुनः एक ऐसी स्थिति पैदा हुई जिसकी छाप राजनीतिक ही नहीं वरन् सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक रूप में भी देखा जा सकता है। यह एक ऐसा दौर था जब प्रेस सेन्सर पुनः देखने को मिलता है, सरकार के विरोध में लिखने वालों के ख़िलाफ़ कड़ी कार्यवाही की जाती है। चूँकि इस घटना नें लोगों के मन में जागरूकता पैदा करने का कार्य किया और साथ इस युग में अनेक ऐसे परिवर्तन हुए जो भारतीय समाज के लिए नए थे।

सन् १९९० के बाद वैश्विक स्तर पर अनेक परिवर्तन हुए। सोवियत संघ का विघटन, अमेरिकी प्रभुत्व के परिणामस्वरूप उदारीकरण का प्रभुत्व, मानवीय अधिकारों को बल मिलना, अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक सुधारों का वैश्विक पटल पर लागू होना आदि प्रमुख वैश्विक परिवर्तन रहे। इन सभी परिवर्तनों से भारत भी अछूता नहीं रहा। उदाहरण के लिए भारत में आर्थिक क्षेत्र में उदारीकरण की शुरुआत, सामाजिक क्षेत्र में पिछड़े वर्गों को आरक्षण, राजनैतिक क्षेत्र में अस्थायी या अल्पमत सरकारों की सत्ता, सांस्कृतिक क्षेत्र में वैश्विक दरवाज़े (संचार क्रांति के परिणाम स्वरूप) खुलने के साथ भारतीय संस्कृतियों में परिवर्तन, धार्मिक क्षेत्र में धार्मिक कट्टरता का प्रादुर्भाव (बाबरी विध्वंश के परिणामस्वरूप) आदि घटनाओं नें पूरे जनमानस पर व्यापक प्रभाव डाला। इन सभी घटनाओं से साहित्य की लगभग सभी विधाएँ प्रभावित हुई और व्यंग्य विधा भी भारत में हो रहे इन सभी परिवर्तनों से प्रभावित हुई। इन सभी परिवर्तनों की वजह से व्यंग्यकार "के पास लिखने का मसाला इतनी अधिक मात्रा में था कि यदि व्यंग्य को गम्भीरता से लिया जाता तो चुनाव की समस्या पैदा हो जाती कि किस विषय पर लिखें, किस पर न लिखें। दुर्भाग्य से ऐसा कम ही हो पाया।"1 इस काल में लिखे गए व्यंग्यों में जितने व्यंग्य राजनीतिक मुद्दों पर लिखे गए उतने व्यंग्य अन्य किसी भी क्षेत्र के ऊपर नहीं लिखे गए। इस युग में राजनीतिक व्यंग्यों की अधिकता देखने को मिलती है। राजनेताओं की अवसरवादिता, परिवारवाद एवं छिछोरेपन जैसी प्रवृत्तियाँ देखने को मिलने लगी जिसके परिणामस्वरूप राजनीतिक भ्रष्टाचार तेज़ी से बढ़ रहा था। इन सभी विसंगतियों पर व्यंग्य लेखन इस दशक में देखने को मिलता है। 'विकलांग श्रद्धा का दौर', 'पाखंड का अध्यात्म', 'दो नाम वाले लोग', 'काग भगोड़ा', 'तुलसीदास चंदन घिसैं' जैसी रचनाओं के माध्यम से परसाई जी नें इन विसंगतियों पर प्रहार किया। प्रतिरोध युग में रचनाकारों को विषय–चयन की स्वतंत्रता नहीं होने के बावजूद विषयों की विविधता देखने को मिलती है, किंतु इस काल में विषय–चयन की स्वतंत्रता के बावजूद व्यंग्यकारों नें अनेक मुद्दों को नज़रंदाज़ कर दिया। "अंतर्राष्ट्रीय सम्बंध, उदारीकरण, बाज़ारवाद, सांस्कृतिक अवमूल्यन जैसे विषयों पर कुछ गम्भीर लेखकों नें ही कलम चलाई। आदिकाल में जहां स्वयं भारतेंदु हरिश्चंद्र, बालमुकुंद गुप्त, मध्यकाल में बेढब बनारसी, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', श्रीनारायण चतुर्वेदी, स्वर्ण युग में परसाई, जोशी, त्यागी, शुक्ल, शंकर पुणतांबेकर, नरेंद्र कोहली, के० पी० सक्सेना जैसे रचनाकारों नें धार्मिक विसंगतियों तथा साम्प्रदायिकता, अंधविश्वासों आदि पर जमकर प्रहार किये वैसा इस काल में कम ही देखने को मिल रहा है। गोधरा ट्रेन अग्निकांड हो या गुजरात के साम्प्रदायिक दंगे, मेरठ–अलीगढ़ का हिंदू–मुस्लिम तनाव हो या ढोंगी साधुओं की धन लोलुपता, सती–प्रथा हो या फिर निठारी कांड ऐसे मुद्दों पर हमारे व्यंग्यकार हमेशा बचते ही रहे हैं। बमुश्किल आठ–दस व्यंग्यकारों नें इन मुद्दों पर लिखने की हिम्मत की है।"2 यह युग व्यंग्य के लिए एक संक्रमण क़ालीन युग रहा है जिसकी वजह से इस युग को आधुनिक काल के साथ–साथ संक्रमण क़ालीन युग भी कहा जा सकता है। इस युग में व्यंग्य समाचार पत्र–पत्रिकाओं से लेकर अनेक प्रकाशक संस्थानों तक दिखायी देने लगे। व्यंग्य को अब रचनाधर्म के रूप में प्रतिष्ठित किया जाने लगा। हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रवींद्रनाथ त्यागी, श्रीलाल शुक्ल, नरेंद्र कोहली, शंकर पुणतांबेकर आदि नामी व्यंग्यकारों नें इस युग में व्यंग्य रचना की। हिंदी व्यंग्य आलोचना के क्षेत्र में भी उन्नति देखने को मिली। डॉ० बालेंदु शेखर तिवारी, डॉ० श्यामसुंदर घोष, डॉ० मलय, डॉ० तेजपाल चौधरी, डॉ० भगवानदास कहार, डॉ० सुरेश माहेश्वरी, डॉ० नंदलाल कल्ला, डॉ० हरिशंकर दुबे, राजेश चौधरी, बाबूराव देसाई, सुभाष चंदर जैसे प्रमुख व्यंग्य विचारकों नें व्यंग्यालोचना को प्रतिष्ठित किया।

इस युग में व्यंग्य की पारम्परिक विधाओं के अतिरिक्त व्यंग्य की नयी विधाएँ भी प्रकाश में आई। उदाहरण के लिए व्यंग्य पत्रकारिता, व्यंग्य चर्चा, व्यंग्य सम्पादन, व्यंग्यालोचना आदि। व्यंग्य के अगर रूपों की बात करें तो व्यंग्य निबंध – राजनीतिक व्यंग्य निबंध, सामाजिक व्यंग्य निबंध, आर्थिक व्यंग्य निबंध, सांस्कृतिक व्यंग्य निबंध, शैक्षणिक व्यंग्य निबंध, धार्मिक व्यंग्य निबंध, साहित्यिक व्यंग्य निबंध, प्रशासनिक व्यंग्य निबंध; व्यंग्य कथा– राजनीतिक व्यंग्य कथा, सामाजिक व्यंग्य कथा, आर्थिक व्यंग्य कथा, सांस्कृतिक व्यंग्य कथा, व्यंग्य उपन्यास, लघु व्यंग्य आदि रूपों में व्यंग्य की प्रस्तुति हुई। आधुनिक युग के प्रमुख व्यंग्यकारों एवं उनकी प्रमुख रचनाओं की अगर बात करें तो निम्न रचनाकार और उनकी रचनाओं का उल्लेख किया जा सकता है। गोपाल प्रसाद व्यास कृत 'नारद जी खबर लाए हैं'; डॉ० संसार चंद्र कृत 'लाख रूपये की बात' एवं 'विदूषक की याद में'; कृष्ण चराटे कृत

'प्रतिनिधि व्यंग्य और हास्य' एवं 'हाथ दो और मुड़ जाओ'; केशवचंद्र वर्मा कृत 'मोहब्बत दाढ़ी और मूँछ और मनोविज्ञान' एवं 'काठ का उल्लू और कबूतर बेपानी के लोग'; रामनारायण उपाध्याय कृत 'भेड़ और भेड़िए' एवं 'बोलता हिंदुस्तान'; हरिशंकर परसाई कृत 'आवारा भीड़ के ख़तरे', 'प्रेमचंद के फटे जूते' और 'जाने पहचाने लोग'; शरद जोशी कृत 'यत्र तत्र सर्वत्र'; श्रीलाल शुक्ल कृत 'अगली शताब्दी का शहर', 'यहाँ से वहाँ', 'कुछ ज़मीन पर कुछ हवा में' एवं 'विश्रामपुर का संत'; रवीन्द्रनाथ त्यागी कृत 'बादलों का गाँव', 'पूरब खिले पलाश', 'रस विलास' एवं नरेंद्र कोहली कृत 'अस्पताल' आदि रहे हैं।

उपर्युक्त संक्षिप्त विवरण से यह निर्विवाद रूप से स्थापित हो जाता है कि व्यंग्य के इतिहास में काल–विशेष की परिस्थितियों एवं प्रवृत्तियों का विशेष योगदान रहा है। इन परिस्थितियों नें कई बार अवसर के रूप में तो कई बार समस्याओं के रूप में व्यंग्यकार को प्रभावित किया है।

संदर्भ सूची

1. सुभाष चंदर; हिंदी व्यंग्य का इतिहास; भावना प्रकाशन; दिल्ली; तृतीय संस्करण; २०१७; पृष्ठ ३२५ पर उद्धृत
2. सुभाष चंदर; हिंदी व्यंग्य का इतिहास; भावना प्रकाशन; दिल्ली; तृतीय संस्करण; २०१७; पृष्ठ ३२६–३२७ पर उद्धृत